भा.कृ.अनु.प.– राष्ट्रीय अनार अनुसंधान केन्द्र, सोलापुर
ICAR - National Research Centre on Pomegranate
(Indian Council of Agricultural Research)
NH-65, Solapur-Pune Highway, Kegaon, Solapur-413 255 (M.S.)
T-(0217) 2354330, 2350074, 2350263,F-(0217) 2353533
E mail- nrcpomegranate@gmail.com, www.nrcpomegranate.icar.gov.in
(ISO 9001:2008 Certified Institute)

अनार फसल की द्वैमासिक सलाह

(अगस्त-सितंबर २०२१)

ज्योत्सना शर्मा, आशिष माइति, एन वी सिंह, मल्लिकार्जुन हेच, सोमनाथ एस पोखरे और श्री. दिनकर चौधरी

मृग बहार (मई- जून फसल नियमन)

बाग का वर्तमान अवस्था :- (i) फलों के बढ़ने की अवस्था (ii) फूल और फल धारण

अ) बागवानी क्रियाएँ:-

(i) फलों के बागों में बारिश खत्म होने के बाद नेप्थिल एसिटिक एसिड (एनएए) @ १० पीपीएम या एनएए ४.५% @ २२.५ मिली / १०० लीटर यदि पहले के महीनों में छिड़काव नहीं किया गया हो तो १५ दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

(ii) जहां सितंबर के अंत में बगीचों में फूल आने की अवस्था होती है, बारिश खत्म होने के बाद एक बार हल्की शूट छाटनी की सिफारिश की जाती है।

ब) पोषक तत्व प्रबंधन:-

(i) बाग १००% फल धारण और फलों के बढ़ने की अवस्था मे

१ ५० पीपीएम के प्रमाण मे जिबरेलिक एसिड के दो छिड़काव १५ दिनों के अंतराल पर करे ।

२ उर्वरक एनपीके ००:५२:३२ (मोनो-पोटेशियम फॉस्फेट), यूरिया और ००:००:५० क्रमशः ८.५०, २२.५०,१६.३० किग्रा / हेक्टेयर / समय ड्रिप से ७ दिनों के अंतराल में ५ बार करे ।

ICAR NRCP SOLAPUR

३ १.०-१.५ किग्रा सूक्ष्म पोषक मिश्रण या जिंक सल्फेट ३ग्राम / लीटर+मैंगनीज सल्फेट ६ ग्राम+ बोरिक एसिड २.५ ग्राम / लीटर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें।

४ उर्वरक एनपीके ००:५२:३२ (मोनो-पोटेशियम फॉस्फेट) के प्रति १० ग्राम के तीन छिड़काव करने चाहिए।

(ii) फुलधारणा और फलधारणा की अवस्था:-

१. घुलनशील एनपीके ००:५२:३२ (मोनो-पोटेशियम फॉस्फेट) @ ८.५ किग्रा / हेक्टेयर / समय - ड्रिप द्वारा ७ दिनों के अंतराल पर ३ बार इसतमल करे।

२. जिप्सम @ १.७०-१.८० किग्रा और मैग्नीशियम सल्फेट @ ७०० ग्राम / पेड़ को मिट्टी से डालें और उसके बाद पानी दें। मैग्नीशियम सल्फेट भी ड्रिप तकनीक से देना चाहिए और उसके बाद पानी देना चाहिए।

क) कीट प्रबंधन:

(i) बाग १००% फल धारण और फलों के बढ़ने की अवस्था मे

पहला छिड़काव: सिंट्रानिलिप्रोल ०.७५ मिली/ली + ०.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर/ली पानी या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल १८.५ एससी ०.७५ मिली/ली या टॉलफेनपाइरिड १५% ईसी ०.७५ मिली/ली या फ्लोनिकैमिड ५०% डब्ल्यूजी छिड़काव ०.७५-१.० मिली/लीटर और + ०.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर/लीटर ।

दूसरा छिड़काव: अज़ाडायरेक्टिन / नीम का तेल १% (१०००० पीपीएम) ३ मिली + ०.२५ मिली/ली स्प्रेडर स्टिकर पानी या पोंगामिया (करंज बीज) तेल ३ मिली + ०.२५मिली/ली स्प्रेडर स्टिकर या उपरोक्त दोनों ३ + ३ मिली/ली + स्प्रेडर स्टिकर ०.२५ मिली/ली के रूप में छिड़काव करें ।

कीड़ों की घटनाओं के आधार पर, पहले छिड़काव में कीटनाशकों को अगले छिड़काव के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। एक सीजन में २-३ बार से अधिक छिड़काव नहीं लेना चाहिए।

ICAR NRCP SOLAPUR

(ii) फुलधारणा और फलधारणा की अवस्था:-

चूसने वाले कीड़ों के लिए पीले/नीले चिपचिपे जाल को पेड़ की चोटी के नीचे २५-३० /एकड़ १५ सें.मी. की गहराई पर लगाएं और १५ दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

पहला छिड़काव: स्पिनेटोरम १२% एससी १.० मिली/ली या स्पिनोसैड ४५% एससी ०.५ मिली/ली और ०.२५ मिली स्टिकर स्प्रेडर/ली।

दूसरा छिड़काव: पहले छिड़काव के ७-१० दिन बाद स्पिनोसैड ४५% एससी ०.५ मिली/लीटर या नीम का तेल १% (१०००० पीपीएम) ३.० मिली + पोंगामिया (करंज बीज) तेल @ ३ मिली + ३.०मिली स्प्रेडर स्टिकर्स / लि।

तीसरा छिड़काव: स्पिनोटेरम १२% एससी १.० मिली या स्पिनोसैड ४५% एससी ०.५ मिली और ०.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर / लीटर।

ड) रोग प्रबंधन:

(i) सैलिसिलिक एसिड ०.३ ग्राम/लीटर का छिड़काव फूल आने से एक महीने पूर्व के अंतराल में चार बार छिड़काव करना चाहिए।

(ii) बरसात के मौसम के आधार पर ७-१० दिनों के बाद छिड़काव करें। बोर्डो मिश्रण ०.५% या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड ५०% डब्ल्यू.पी. (२.५-३.०ग्रा / लि) या कॉपर हाइड्रॉक्साइड ५३.८% (२-२.५ ग्रा / लि) स्प्रेडर स्टिकर ०.३-०.५मिली/लि अतिरिक्त २-ब्रोमो, २-नाइट्रोप्रोपेन -१, ३ डायोल ९५% (ब्रोनोपोल ९५%) ०.५ ग्रा / लि महीने में एक बार छिड़काव करे (कभी-कभी आवश्यकतानुसार उपयुक्त कवकनाशी के साथ महीने में दो बार छिड़काव करें)।

(iii) यदि बगीचे में पहले से तैलीय धब्बे हों तो ब्रोनोपल को महीने में एक बार और ७-१० दिनों के अंतराल पर स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट ९०% + टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड १०% (स्ट्रेप्टोसाइक्लिन) ०.५ ग्राम / लीटर से छिड़काव करें। कृपया ध्यान दें कि तैलीय धब्बे बैक्टीरिया में ०.५ ग्राम/ली से कम की अनुशंसित खुराक से कम खुराक पर छिड़काव करने पर रोग नियंत्रित नहीं होता है।

(iv) बगीचों में, फल वृद्धि के चरण के दौरान तैलीय धब्बे प्रबंधन के लिए फलों का केवल १०-२५% संक्रमण, बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए आपात स्थिति में ४ दिनों के

ICAR NRCP SOLAPUR

अंतराल पर १-२ छिड़काव करना चाहिए और फिर केवल एक छिड़काव आवश्यकतानुसार करना चाहिए.

तेलिया दाग प्रबंधन के लिए आपातकालीन छिड़काव

पहला छिड़काव: कॉपर हाइड्रॉक्साइड ५३.८% (२ग्रा/ली)+ स्ट्रेप्टोसाइक्लिन १००% ०.५ ग्रा/ली + ब्रोनोपोल ९५%-९८% @ ०.५ ग्रा/ली + स्प्रेडर स्टिकर ०.५ मिली /ली। चौथे दिन छिड़काव न करें बल्कि पांचवें दिन छिड़काव करें।

दूसरा छिड़काव: पहले छिड़काव के ४ दिन बाद कार्बेन्डाजिम ५०% डब्लू पि @ १ग्रा/ली + स्ट्रेप्टोसाइक्लिन १००% ०.५ ग्रा/ली + ब्रोनोपोल ९५%-९८% ०.५ ग्रा/ली + स्प्रेडर स्टिकर ०.५ मिली / लि।

(v) बागों में फफूंद जनित रोगों की घटनाओं के अनुसार कॉपर फफूंदनाशकों को उपयुक्त फफूंदनाशकों से बदला जाना चाहिए। जैसा कि के अंत में दिया गया है, सलाह के अंत में फफूंद की पपड़ी, धब्बे, सड़ांध आदि के लिए कुछ आशाजनक कवकनाशी दिए गए हैं।

(vi) मर और सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए: मर और सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए कृपया परामर्श के अंत में दिए गए निर्देशों का पालन करें।

बहार हस्तः(सितंबर-अक्टूबर फसल विनियमन)

बाग की वर्तमान स्थिति: (तनाव मुक्ति होना और फसल विनियमन)

अ) बागवानी क्रियाएं: बारिश के २०-२५ दिन बाद सिंचाई न करें। बागों से गिरे हुए पत्तों को खाद डालते समय मिट्टी से हटाया / गाड़ा जा सकता है

(i) तनाव की तीव्रता के आधार पर एथेफ़ोन का उपयोग करके पत्तीझड/ डेफोलिएशन/ पतझड़ किया जा सकता है:

- जहां बेमौसम बारिश या अन्य कारणों से संयंत्र उचित तनाव में नहीं है: इथेफॉन ३९% एसएल दो छिड़काव लें, पहले ०.९ मिली/लीटर छिड़काव करें, फिर दूसरा इथेफॉन छिड़काव १ से १.५ मिली/लीटर पीले रंग के आधार पर, फिर ५ से ८

दिन मे छिड़काव करें। डीएपी १२:६१:०० या ००:५२:३४ @ ५ ग्राम/लीटर को प्रत्येक इथेफॉन छिड़काव के साथ मिलाएं

- मूल रूप से जब तनाव के कारण पत्ते पीले हो जाते हैं, तो इथेफॉन ३९% एस एल १ मिली / ली + डीएपी या १२:६१:०० या ००:५२:३२, ५ ग्राम / ली का छिड़काव करें।

(ii) यदि शाखा घनत्व अधिक है, तो रिफिल के आकार की शाखाओं को ऊपर से १०-१५ सेमी तक काटकर हल्का कट दिया जाना चाहिए और हवा को गतिमान रखने और सूर्य के प्रकाश को पहुंचने के लिए छटाई करनी चाहिए ।

ब) पोषक तत्त्वों का प्रबंधन:

i. बाग का वर्तमान स्थिति: (तनाव मुक्ति होना)

- २०-२५ किग्रा सड़ी हुई गोबर की खाद या १३-१५ किग्रा सड़ी हुई गोबर खाद + २ किग्रा वर्मीकम्पोस्ट + २ किग्रा नीम-केक प्रति पौधा या ७.५ किग्रा अच्छी तरह से सड़ी कुक्कुट खाद + २ किग्रा नीम-केक प्रति पौधा डालें ।
- २५-३० किलो गोबर का सड़ा खाद या १५-२० किलो गोबर का सड़ा खाद/पेड़ + २ किलो कृमि का खाद + २ किलो नीम पाउडर/पेड़ या ७.५ किलो अच्छी तरह सड़ी मुर्गी की खाद + २ किलो नीम पाउडर/पेड़ दें।
- खाद डालने के तुरंत बाद हल्की सिंचाई करें ।
- मृग बहार पोषक तत्व प्रबंधन में उल्लिखित रासायनिक उर्वरकों के उपयोग के २०-३० दिनों के बाद बायोफॉर्म्यूलेशन का उपयोग किया जा सकता है।

  सुचना: जैव-सूत्रीकरण रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के २०-३० दिन बाद करें।
- लागू पोषक तत्वों के उपयोग के लिए मिट्टी में उचित नमी सुनिश्चित करें। रेतीली मिट्टी में १५-२० लीटर ३ से ४ दिन के अंतराल पर और रेतीली दोमट मिट्टी में १०-१५ लीटर पानी साप्ताहिक अंतराल पर सिंचाई करें। बारिश के बाद २-५ दिनों तक सिंचाई न करें, जो कि प्राप्त वर्षा और मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करता है।

ii. बाग की अवस्था - (पत्ती और फूल की कली दीक्षा)

- यदि नए पत्ते खुल गए हैं और फूल की कली दिखाई देती है, नेप्थिल एसिटिक एसिड (एनएए) ४.५% @ २२.५ मिली / १०० लीटर पानी का पत्तेदार आवेदन दें।
- सूक्ष्म पोषक तत्वों का मिश्रण १-१.५ किग्रा / हेक्टेयर। इस प्रकार करना चाहिए

ICAR NRCP SOLAPUR

- उर्वरक नाइट्रोजन: फॉस्फोरस: पोटाश, ००:५२:३४ (मोनोपोटेशियम फॉस्फेट) ८.५ किग्रा / हेक्टेयर / समय को ७ दिनों के अंतराल पर ३ बार ड्रिप द्वारा डालना चाहिए।

क) कीट प्रबंधन:

i. **नए पत्तों के उभरने की अवस्था:-** पहली सिंचाई के 10-15 दिन बाद 25-15 एकड़ में नीला/पीला स्टिक ट्रैप लगाएं।

ii. **विकास की अवस्था :-** अज़ादिरेक्टिन / नीम का तेल १% (१०००० पीपीएम) @ ३मिली + 0.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर / लीटर पानी या पोंगामिया तेल@ ३ मिली + ०.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर / लीटर पानी या उससे अधिक मिश्री ३ +३मिलि / लीटर मिश्रण ०.२५ मिली ७-१० दिनों का अंतराल स्प्रेडर स्टिकर से छिड़काव करें।

iii. **फूल बनने की अवस्था** पहले छिड़काव के ७-१० दिन बाद सिनेट्रानिलिप्रोल @ ०.७५ मिली /ली+ ०.२५ या क्लोरेंट्रानिलिप्रोल १८.५% ईसी @ ०.७५ मिली / ली + ०.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर या फ्लुबेंडियामाइड १९.९२% डब्ल्यू / डब्ल्यू +थायाक्लोप्रिड १९.९२% डब्ल्यू / डब्ल्यू @ @०.५ मिली / के साथ दुसरा छिड़काव ले. + ०.२५ मिली स्प्रेडर स्टिकर का छिड़काव करे ।

ड) रोग प्रबंधन:

i. पतझड़ से ठीक पहले ताजा तैयार १% बोर्डो मिश्रण का १ छिड़काव करें ।

ii. फूल आने से पहले १ महीने के अंतराल पर ३.० ग्राम/ ले सैलिसिलिक एसिड०.३ ग्राम/ और सूक्ष्म पोषक मिश्रण का २.० ग्राम/ ली का ४ छिड़काव महीने के अंतराल पर पुष्पन के पहले से करें

iii. बोर्डो मिश्रण ०.५% या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड ५०% ड्ब्लु पी @ २.५ -३.० ग्रा/ली या कॉपर हाइड्रॉक्साइड ५३.८% @ २.०-२.५ ग्रा/ली और स्प्रेडर स्टिकर @ ०.३ से ०.५ मिली/ली का छिड़काव २-ब्रोमो-२-नाइट्रोप्रोपेन-१, ३-डायोल (ब्रोनोपोल ९५%) @०.५ ग्राम/ली के साथ अदल बदल कर १० दिनों के अंतराल पर लिया जा सकता है।

iv. यदि बाग में बैक्टीरियल ब्लाइट का संक्रमण पहले हो चूका है तो स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट ९०% + टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड १०% (स्ट्रेप्टोसाइक्लिन) @०.५ ग्राम/लीटर महीने में एक बार ब्रोनोपोल के छिड़काव से ७-१० दिनों के अंतराल पर करें। बहुत अधिक

ICAR NRCP SOLAN

छिड़काव से बचें, बारिश के बाद स्ट्रेप्टोसाइक्लिन + कॉपर आधारित कवकनाशी का एक अतिरिक्त छिड़काव लें।

v. बाग में मौजूद फफूंद की समस्याओं के आधार पर, कॉपर आधारित फॉर्मूलेशन को तालिका १ में दिए गए उपयुक्त कवकनाशी से बदला जा सकता है , फफूंदजनक स्कैब, धब्बे और सड़ने के लिए कुछ एडवाइजरी के आखिर में कुछ प्रभावशाली फफूंदनाशी दिये गए हैं ।

vi. विल्ट और नेमेटोड प्रबंधन: कृपया क्रम संख्या IV: विल्ट और नेमेटोड प्रबंधन पर सलाह के अंत में दिए गए निर्देशों का पालन करें।

II बहार: हस्तः(जनवरी - फ़रवरी फसल विनियमन)

बाग की स्थिति:- (i)छटाई की अवस्था (ii) विश्राम का अवधि

अ) बागवानी क्रियाएँ:-

कटाई के कुछ समय बाद, मुख्य पौध की छंटाई पेंसिल की मोटाई (ऊपर से 60 सेमी) तक की शाखाओं को हटाकर, छत के केंद्र में टूटी, क्रिस-क्रॉस या संक्रमित शाखाओं, सीधी और तेजी से बढ़ती पानी की कलियों को हटाकर की जानी चाहिए। अच्छी रोशनी पाने के लिए छत को खोलना चाहिए।

ब) पोषक तत्त्वों का प्रबंधन:-

i. प्रति पौधा २५-३० कि.ग्रा. गोबर की सड़ी हुई खाद या १५-२० किग्रा गोबर की सड़ी हुई खाद + २ किग्रा केंचुएँ की खाद + २ किग्रा नीम की खली प्रति पौधा या ७.५ किग्रा अच्छी तरह से विघटित मुर्गी खाद + २ किग्रा नीम की खली प्रति पौधा डालें।

ii. २.५-२.८ कि.ग्रा. जिप्सम और ८०० ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट प्रति पौध डालें और उसके बाद राइजोस्फीयर की मिट्टी में मिलाएं।

iii. जैव योगों का प्रयोग रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग के २०-३०दिन बाद किया जा सकता है। निम्नलिखित जैव-सूत्रीकरण जैसे एज़ोस्पिरिलम एसपी में से कोई भी या संयोजन लागू करें या एस्परज़िलस नायजर या ट्राइकोडर्मा विरिडी और पेनिसिलियम पिनोफिलम अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद में अलग-अलग १२-१५ दिनों तक छाव में गुणन

ICAR NRCP SOLAPUR

करें तथा मिश्रण में ६०-७० % नमी की मात्रा बनाए रखते हैं और दो दिनों पर मिलाते रहते हैं। लगभग १५ दिनों में ये सहायक जीवाणु/फफूंद खाद में अच्छी तरह विकसित हो जाते हैं। उपयोग करने से पहले, बायोफॉर्म्यूलेशन मिश्रण में अर्बुस्कुलर माइकोरिज़ल फफूंद (ग्लोमस इंट्रारारेडिसस / राइजोफैगस इर्रेगुलरिस) १०-२० ग्राम प्रति पौधे की दर से मिलाएं और इस समृद्ध बायोफोमुलेशन मिश्रण का 3-5 किलो ग्राम प्रति पौध की दर से उपयोग करें। सूक्ष्म पोषक मिश्रण @ १.०-१.५ किग्रा / हेक्टेयर का छिड़काव करें।

क) कीट प्रबंधन:

यदि फसल की कटाई करनी है तो फल मक्खियों/चूसने वाले कीड़ों/कीटों आदि के लिए नियमित रख-रखाव का कार्य करना चाहिए।

i. **फल चूसने वाले कीड़े**

- टीनोस्पोरा (गुलवेल) को खेत और आसपास के क्षेत्र से हटा दें।
- खेत के प्रत्येक कोने में १५०-२०० वाट की फ्लोरोसेंट लाइटें लगाएं, कोने की रोशनी को एक-दूसरे पर केंद्रित करें और ७ बजे रोशनी चालू करें।
- यदि कीट आबादी/फलों की हानि अधिक है और अगस्त के अंत या सितंबर में फलों के पेड़ लगाए जाने की आवश्यकता है, तो अगस्त के पहले १० दिनों में पॉलीप्रोपाइलीन गैर बुने हुए बैग (पीपीएनडब्ल्यू)/कवर के साथ अलग फलदार पेड़/पौधे/पंक्तियां उपलब्ध होंगी। कृपया ध्यान दें कि यदि बगीचे में यह रोग है तो बैगिंग / कवरिंग बैक्टीरिया या फल सड़ने की घटनाओं को बढ़ा सकता है। जीवाणु संक्रमण, फलों के सड़ने, मिली बग के लिए बैगिंग से पहले उचित छिड़काव कुछ हद तक मदद कर सकता है।
- बैगिंग करने में देरी हो तो अज़ादिरेक्टिन / नीम का तेल १% (१००००) @ ३मिली + मछली के तेल का रेजिन साबुन 0.५-१.०मिली/ली पानी का छिड़काव सीमा पार करना चाहिए।

ii. **फल मक्खी से पोहच्नेवाली क्षति:-** टोरला यीस्ट / बैक्ट्रोसेरा डॉर्सालिस के बैट के साथ मैकफिल ट्रैप स्थापित करें और १५-२० दिनों के अंतराल पर बदलें।

ICAR NRCP SOLAPUR

ड) रोग और सूत्रकृमि प्रबंधन:-

- जहां अंतिम कटाई १५-२० दिनों में होने की संभावना है, वहां छिड़काव की आवश्यकता नहीं है।
- जहां बाग विश्राम पर हैं, वहां पर्यावरण और वहां की समस्याओं के आधार पर १% या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड ५०% डब्ल्यू.पी. (३ ग्राम/ली) या कॉपर हाइड्रॉक्साइड ५३.८% डब्ल्यूपी (२ ग्राम/ली) के अतिरिक्त २-ब्रोमो, २-नाइट्रोप्रोपेन-१,३ डायोल ९५% (ब्रोनोपोल) ०.५ ग्राम/लीटर फंगस का छिड़काव करें। पाया जाए तो मैनकोजेब ७५% डब्लू पी. २ मिली/लि का छिड़काव करें। हमारी वेबसाइट पर दी हुयी उपयुक्त कवकनाशी सूची का इस्तेमाल करें । (https://nrcpomegranate.icar.gov.in/files/Advisory/91.pdf).
- विल्ट और नेमेटोड प्रबंधन: कृपया क्रम संख्या IV: विल्ट और नेमेटोड प्रबंधन पर सलाह के अंत में दिए गए निर्देशों का पालन करें।

अनार के फफूंदजनित स्कैब , धब्बे और सड़न के लिए कुछ प्रभावशाली कवकनाशी	
१. मंडीप्रोपामिड २३.४%एस सी @ १मिलि/ली । २. मेतिराम ५५%+पायराक्लोस्ट्रोबिन ५% ईसी @ ३जी/एल। ३.प्रोपिकोनाज़ोल २५%ईसी@१मिलि/ली + अजोक्सिस्त्रोबिन @ १मिलि/ली। ४. एज़ोक्सिस्ट्रोबिन २०% + डिफेनोकोनाज़ोल १२.५% एससी @ १-२मिली/ली। ५. क्लोरोथालोनिल ५०% + मेटलाज़क्सिल एम ३.७५% @ २मिली/ली। ६.बोर्डो मिश्रण @ ०.५%।	७.कॉपर ऑक्सीक्लोराइड ४५% + कसुगामाइसिन ५% @ २.५ग्रा/ली। ८. ज़िनेब ६८% + हेक्साकोनाज़ोल ४% दब्लु पि @ २.५ग्रा/लि। ९. ट्राईसाइक्लाज़ोल १८% + मैनकोज़ेब ६२% दब्लु पि@ २.५ग्रा/लि। १०. क्लोरोथालोनिल ७५%दब्लु पि @२.५ग्रा/लि । ११. प्रोपिकोनाज़ोल @ १मिलि/लि।
सुचना: उपरोक्त में से किसी के साथ १०-१४ दिनों के अंतराल पर फूल आने और फल बनने की अवस्था में २-३ छिड़काव करने से सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त होते हैं। यह बाद के चरणों में कई स्प्रे से बच जाएगा। बोर्डो मिश्रण के अलावा सभी छिड्कावों में हमेशा स्प्रेडर स्टिकर का इस्तेमाल करें। तांबे के फफूंदनाशकों को छोड़कर किसी भी कवकनाशी का प्रयोग मौसम में २ बार से अधिक नहीं करना चाहिए।	

SOLAPUR

- **विल्ट और नेमाटोड प्रबंधन**

मर रोग प्रबंधन: फंगल विल्ट/मर रोग प्रबंधन:

मर रोग का पहला कारण कवक सेरोसाइटोसिस, फुसैरियम आदि है। पता करें कि क्या यह कवक रोगजनकों के कारण हो सकता है। पत्ती के पीलेपन के पहले/प्रारंभिक लक्षणों पर कारण की पहचान करें। पहले लक्षण दिखाई देने पर प्रभावित शाखा की जड़ों की जाँच करें। खुली जड़ों को निकालें और विभाजित करें; यदि गहरा पीला/भूरा/भूरा रंग है और अल्कोहल/फलों की गंध है, तो लक्षणों को फंगस सेराटोसिस्टिस के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। कभी-कभी, अन्य जड़ सड़न कवक जैसे राइज़ोक्टोनिया, स्क्लेरोशियम या फाइटोफ्थोरा भी विल्ट से जुड़े पाए गए हैं।

- सेराटोसिस्टीस, राइझोक्टोनिया, स्क्लेरोशियम के कारण हुए मुरझान रोग प्रबंधन के लिए निम्नलिखित मे से किसी एक आश्वासक प्रोटोकॉल का उपयोग मृदा निर्जन्तुक करने के लिए करे :

विधि I:

1 ड्रेंजिंग प्रोपिकोनाज़ोल २५% ईसी २ मिली / ली + क्लोरपाइरीफोस २०%, २ मिली / ली या थायोमेथोक्सम २५% डब्ल्यूजी १-१.५ ग्राम /ली (५-१०लिटर घोल) लागू करें।

पहली ड्रेंजिंग के ३० दिन बाद दूसरी ड्रेंजिंग एस्परगिलस नाइगर एएन २७ फंगी ५ ग्राम + २ किग्रा खाद / पेड़।

दूसरे ड्रेंजिंग के ३० दिन बाद, तीसरा ड्रेंजिंग अर्बुस्कुलर माइकोराइजा फंगस (एएमएफ) राइजोफैगस एरेगुलरिस के साथ २५ ग्राम + २ खाद / पौधे की दर से किया जाना चाहिए।

या

विधि II:

प्रोपिकोनाज़ोल २५% ईसी २ मिली / ली + क्लोरोपाइरीफोस २०% ईसी २ मिली / ली ड्रेंजिंग ३ बार २०दिन के अंतराल पर करें।

ICAR NRCP SOLAPUR

विधि III:

पहला और तीसरा ड्रेचिंग फॉसेटिल एएल ८०% डब्ल्यूपी ६ ग्राम / पेड़ (१० ली घोल) और दूसरा और चौथा ड्रेचिंग टैबूकोनाज़ोल २५.९% डब्ल्यू / डब्ल्यूईसी ३ मिली / पेड़ (१० ली घोल) २० दिन के अंतराल पर करना चाहिए।

सूचना

- ड्रेंचिंग या तो विश्राम अवस्था मे किया जाना चाहिए या बहार की योजना की शुरुआत में किया जाना चाहिए।
- यदि शॉट होल छेदक संक्रमित है, तो क्लोरपायरीफोस २०% ईसी २ मिली/लीटर से ड्रेन्च करें
- यदि फाइटोफ्थोरा मौजूद है, तो मेटालैक्सिल ८% + मैनकोज़ेब ६४% २-२.५ ग्राम / लि के साथ ड्रेन्च करें।
- ड्रेन्च से पेड़ को भीगाते समय रोगग्रस्त मिट्टी फैली हुई जगह के चारों ओर ४ पेड़ भीगने चाहिए।
- भीगने की पूरी विधि देखने के लिए, कृपया एन आर सी पी वेबसाइट पर जाएँ। उपरोक्त विधियों में से किसी एक का उपयोग करें।

नेमेटोड/ सुत्रकृमि प्रबंधन: a) पौधे पोषक तत्वों की कमी दिखाते हैं b) प्रारंभ में, सूत्रकृमि की जड़ों पर छोटे-छोटे पिंड दिखाई देते हैं c) पूर्ण विकसित वृक्ष में फूल नहीं आता d) अधिक प्रचलित जड़ों पर बड़े नोड्यूल दिखाई देते हैं।

- फफूंद विल्ट प्रबंधन में विधि में उपयोग किए जाने वाले जैव नियंत्रक सूत्र भी रूट नॉट नेमेटोड के संक्रमण को कम करते हैं। वैकल्पिक रूप से अन्य प्रभावशाली जैव फॉर्मूलेशन जैसे *पेसिलोमाइसेस* एसपीपी, या *स्यूडोमोनास* एसपीपी या *ट्राइकोडर्मा* एसपीपी, स्थायी नेमेटोड प्रबंधन के लिए हर ६ महीने में रोपण से ही जोड़ा जा सकता है। इन जैव घटकों का प्रयोग वर्ष में दो बार (एक बार विश्राम की अवधि की शुरुआत में, दूसरी फसल के नियमन पर) मिट्टी में किया जाना चाहिए, जिससे पोषक तत्वों की वृद्धि, पौधों की वृद्धि और रोगों के विरुध जैव रासायनिक प्रतिरोधक क्षमता में सुधार होता है, और अनार में मर रोग भी नियंत्रण में रहता है।

ICAR NRCP SOLAPUR

- यदि संक्रमण अधिक है, तो निम्न में से कोई भी नेमेटीसाइड को आराम की अवधि के दौरान या बहार शुरू होने से ठीक पहले उपयोग किया जाना चाहिए ताकि फलों में किसी भी अवशेष के बिना को कम किया जा सके।
- किसान या तो दानेदार नेमेटीसाइड फ्लूएनसल्फोन २ % जीआर का उपयोग कर सकते हैं। दानेदार नेमेटीसाइड का उपयोग करने के लिए, ड्रिपर के नीचे एक छोटा सा गड्ढा (५-१० सेमी) बनाएं और १० ग्राम प्रति ड्रिपर (अधिकतम खुराक ४० ग्राम / पौधे से अधिक नहीं होना चाहिए) की दर से उपयोग करें; इसे डालने के बाद मिट्टी से ढक दें और पानी देना शुरू करें।
- इसके अलावा फ्लुओपिरम ३४.४८ % एससी २ मिली/पौधे का भी उपयोग किया जा सकता है। नेमेटीसाइड से ड्रेंचिंग से पहले पौधों की मिट्टी को पर्याप्त रूप से गीला किया जाना चाहिए। प्रति पौधा २ लीटर पानी में २ मिली नेमेटीसाइड मिलाएं और ५०० मिली प्रति ड्रिपर (४ ड्रिपर/पौधा) या १००० मिली प्रति ड्रिपर (२ ड्रिपर/पौधा) की दर से डालें।

कृपया ध्यान दें

उपरोक्त सिफारिशें उपरोक्त $N:P_2O_5:K_2O$ के लिए लागू होती हैं यदि लीफ टेस्ट रिपोर्ट से पता चलता है कि $N:P_2O_5:K_2O$ तीव्रता नीचे दी गई इष्टतम तीव्रता सीमा में है। यदि कोई पोषक तत्व इष्टतम सीमा से कम है, तो २५% तक बढ़ाने की सलाह दी जाती है।

पोषक तत्त्व	**इष्टतम कॉन. पाने मध्ये श्रेणी**
नत्र%	१.३२-२.१५
स्पुरत %	०.१८-०.२४
पालाश %	१.२९-१.९९
क्याल्सियम	०.६४-१.२०
म्याग्निसियम %	०.२३-०.४५

कोलेटोट्रिकम रॉट

अल्टरनेरिया हार्ट रॉट

फायटोफोथोरा रॉट

कर्कोस्पोरा दाग

स्फेसीलोमा स्कॅब

तेलिया रोग

मर रोग और उससे संक्रमित जड़े

ड्रेन्चिग की योग्य विधि

अनार में आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण रोग

संक्षिप्त जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

उपरोक्त वसंत ऋतु में अनार रोग के प्रबंधन की जानकारी के लिए किसान निम्न लिंक का प्रयोग करें

१. **रसायनों की आपातकालीन सूची**:- https://nrcpomegranate.icar.gov.in/files/Advisory/91.pdf

२. **तेलिया रोग प्रबंधन- https://nrcpomegranate.icar.gov.in/files/Advisory/89.pdf**

३. **मर रोग प्रबंधन**- https://nrcpomegranate.icar.gov.in/files/Advisory/86.pdf

४. **अन्नद्रव्य प्रबंधन** -(http://nrcpomegranate.icar.gov.in/files/Advisory/41.pdf)

५. **कृषि रासायनिक व्यापार नामों की सूची**:- https://nrcpomegranate.icar.gov.in/files/Advisory/90.pdf

ICAR NRCP SOLAPUR